श्रीरामानन्द-साहित्य माला, पुष्प-५७ वाँ

# * रस-प्रेम भरी आरती *

16732

महात्मा ... पुस्तकालय

श्रीसीतारामजी की रस प्रेम भरी रङ्गीली मनोहर
आरतियों का सुन्दर संग्रह

संग्रहकर्ता—
अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव
'प्रेमनिधि"

श्री रामानन्द-साहित्य माला-पुष्प ५७ वाँ

❀ श्रीजानकीवल्लभ-दुलहा भगवान् की जय. ❀

—: श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः :—

# ❋ रस-प्रेम भरी आरती ❋

श्री सीतारामजी युगल प्रभु की रस प्रेम भरी
रङ्गीली आरतियों का सुन्दर संग्रह

संग्रह कर्ता—
पं० अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव 'प्रेमनिधि'

प्रकाशक—
**श्रीरामानन्द--आश्रम**
जनकपुर धाम (नेपाल)
वाया-जयनगर, जि० मधुवनी (विहार)

परिवर्धित तथा संशोधित तृतीय संस्करण

प्रति १००० ] [ निछावर २) रुपये

श्री जानकी-नवमी सं० २०३६

16732

# ❀ एक--विनय ❀

आरती पूजा का सर्व प्रधान अङ्ग है, पूजा की पूर्ति आरती से ही होती है, सम्पूर्ण सविधान पूजा का पूर्ण फल केवल आरती दर्शन मात्र से ही प्राप्त होता है, इसी लिये भावुक भक्त जन प्राय: आरती दर्शन के लिये लालायित रहते हैं।

आरती में दो भावनायें प्रधान है, एक तो अपने आराध्य इष्टदेव का साङ्गोंपाङ्ग सुन्दर दर्शन करना, तथा दूसरा अपने प्रियतम प्रभु की 'आर्ति' दुःख दोष निवारण कर अपने ऊपर ले लेना। दोनों ही भाव बड़े सुन्दर हैं, अङ्ग-अङ्ग की छबि छटा का सुधा रस पान करने पर यह भाव स्वत: प्रकट होता है कि मेरे प्रभु सदा सुखी रहें, उनका सदा ही मंगल हो, उनकी दोष बाधायें सब मेरे पर आजायँ, इसी हेतु आरती को लेकर लोग अपने शिर पर हाथ ले जाते हैं। बलैयाँ लेते हैं।

आरती चौदह बार उतारी जाती है, प्रभु के चरण से लेकर मस्तक पर्यन्त चौदह भुवनों का निवास है, चौदहों भुवनों में मेरे प्रभु का सदा सुमंगल हो तथा मेरे नाथ के विश्व रूप में समाये चौदहों भुवनों का इसी में स्वत: सुमंगल हो जाता है, जब उनकी आरति दोष उतारने का निवारण करने के लिये ही आरती [ नीराजन ] की यह वैदिक तथा तांत्रिक क्रिया के रूप में भक्त आरती उतारता है, तब भगवान की आरती में अनन्त कोटि चौदह भुवनों की भी आरती हो जाती है।

आदौ चतुः पाद तले च विष्णो
द्वौ नाभि देशे मुख बिम्ब एकम् ।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्त वारान्-
आरार्तिकं भक्त जनस्तु कुर्यात् ॥

श्री चरणों की चार आरती, नाभि प्रदेश की दो आरती, श्रीमुखारविन्द की एक आरती ये सात बार आरती करने के पश्चात् सर्वाङ्ग नख शिख की सम्पूर्ण सात बार आरती प्रेम में मग्न होकर प्रभु के स्वरूप रस पान करते हुए आरती भक्तजन उतारे। आरती पाँच प्रकार की होती है, उसे पञ्चोपचार अथवा पञ्चाङ्ग पूजा भी कहा जाता है—

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीप मालया ।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौत वाससा ॥
तुलसी-पुष्प-पत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथा विधिः ॥

प्रथम दीप माला से, दूसरी शंख जल से, तीसरी श्वेत वस्त्र से, चौथी तुलसी-पुष्प-पीपल वट आदि पवित्र पल्लवों से, तथा पांचमी साष्टांग दण्डवत् प्रणाम द्वारा नीराजन ( आरती ) पाँच प्रकार से की जाती है। प्रत्येक मन्दिरों में प्रायः ये पाँचों प्रकार से आरती की जाती है अन्त में शंख का जल छींटा जाता है उसका भाव भी बड़ा सुन्दर है—

एक तो यह कि प्रभु के पावन श्री दिव्य मङ्गल विग्रह पर घुमाया हुआ जल प्रभु के दिव्य दया-करुणा-वात्सल्य-

औदार्य कृपा आदि गुणों से परिपूर्ण होकर हमारे ऊपर अपने पावन बिन्दुओं से स्पर्श करता हुआ हमारा परम कल्याण करता है।

दूसरा भाव यह है कि प्रभु की अलाय-बलाय दूषित दृष्टि दोष जन्य बाधायें आदि सब हमारे पर आजायँ, वे सदा सुखी प्रसन्न रहैं। उनकी प्रसन्नता में ही अखिल विश्व का परमानन्द परिपूर्ण है। इसी लिये कहा गया है—

**शंख नाभि स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि।**
**अङ्गलग्नं मनुष्याणां सर्व दोषान व्यपोहति॥**

आरती के समय भक्तजन-सन्त-महात्मा बड़े सुन्दर भाव भरे पद गाते हैं, हिन्दी में तथा संस्कृत में ऐसे सैकड़ों पद हैं, अष्टयाम की आठ आरतियों के पद तथा षडऋतु विहार के प्रधान छै भजन तो गायक जन समयानुसार गाते ही हैं परन्तु मङ्गल आरती, शृङ्गार आरती, राजभोग आरती, सध्या आरती तथा शयन आरती ये पाँच आरतियाँ प्रायः सभी बड़े मन्दिरों में नित्यप्रति होती हैं। उनमें भी शृङ्गार तथा संध्या तो सभी मन्दिरों में होती ही हैं, उस समय 'रस प्रेम भरी आरती" यदि भक्तों की भावना में वृद्धि कर सकें, भाव प्रेम बढ़ा सके तो मैं अपना श्रम सफल मानूँगा, पद तो प्राय प्राचीन अर्वाचीन आचार्य-सन्त भक्तों के ही हैं, कुछ अपनी तुकबंदियाँ भी इसीलिये मिला दी हैं कि-'वन्दिय मलय प्रसंग' चरितार्थ हो। इस संस्करणमें नई आरतियाँ भी बढ़ाई गई हैं।

**श्रीरामानन्द-आश्रम**
**जनकपुरधाम (नेपाल)**

**अवध किशोर दास**
**"प्रेमनिधि"**

❀ श्रीजानकी वल्लभो विजयते ❀

श्री रसिक प्रियतमाय श्री दुलहा भगवते नमः

— श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः —

# * रस-प्रेम भरी आरती *

## ❀ मङ्गल वन्दना ❀

श्री जानकी वदनाम्भोज मकरन्द मधुव्रतः ।
पूर्णकामो-घनश्यामो रामो विजयतेतराम् ॥

## ( आरती हरण श्रीराम की आरती )

हरति सब आरती, आरती राम की ।
दहन दुख-दोष, निर्मूलनी काम की ॥

सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ।
उडत अघ विहँग सुनि ताल करतालिका ॥

भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ।
विमल विज्ञानमय तेज विस्तारिणी ॥

मोद-मद-कोह-कलि कंज हिम यामिनी ।
मुक्ति की दूतिका देह द्युति दामिनी ॥

प्रणतजन-कुमुद-वन इन्दु कर जालिका।
'तुलसि' अभिमान महिषेश बहु कालिका॥

—गोस्वामी श्रीतुलसी दासजी

## ( श्री सीताराम नीराजनम् )

जनक सुता सहितं रघुराजम्।
अधि सिंहासनमति सुख भाजम्॥
काऽपि हि नीराजयति परा।
मणि दीपावलि ललित करा॥
काचन मृदु वादयति मृदंगम्।
झल्लरिकामपि काऽपि सुरंगम्॥
उदयति भूषण निकर मरीचि--
र्लसति सखीषु च कौतुक वीचिः॥
हरेर्भणितमिदमनु रघुवीरम्।
निवसतु चेतसि सरस गभीरम्॥

—श्री हर्याचार्य जी महाराज

## ❀ मङ्गला आरती ❀

मंगल आरती करत सहचरी। कंचन कोपर मंगल भरी॥
मंगल रूप धरैं पिय प्यारी। गावति सब मंगलअधिकारी॥
मंगल समय विराजत लोने। मंगल रामसिया छबि सोने॥

मंगलगान बजै मंगल धुनि । मंगल मंदिर नाचत रुनि झुनि
मंगल पवन सुगंधि महल में । मंगल गावति रूप गहल में।।
मंगल धूप-दीप-न्योछावरि । मगल रंग उमंग अमावरी ।।
मंगल 'कृपा निवास' उपासी । भयो सुमंगल विगत उदासी।।

—श्री कृपानिवासजी

## ❀ शृङ्गार आरती ❀

आरती सखिन शृङ्गार सजोरी ।
पिय प्यारी छबि चन्द चकोरी ।।
बैठे सुभगसिंहासन-प्रियतम,सजलजलद सिय दामिनि कोरी।
बरसतसुधामाधुरीविहसनि,भरि-भरि पियत दृगन पुटगोरी।।
विविध स्वाद मेवा मनरोचक,लिये खड़ी मणि थार भरोरी
दाख बदाम छोहारा किसमिस, गिरी सरस मिश्रीरस बोरी।।।
पाई श्याम श्यामासंग शोभित,नीकी बनी मनोहर जोरी ।।
अतर पान दै गाय मधुर स्वर, बजहि यंत्र बहु नृत्य रच्यो री
सुमन माल पहिराय नागरी,आरति करि बलिबलि तृणतोरी
लै आदरस देखावति सहचरि,'ज्ञानाअली'जय जयतिमचोरी

—श्री ज्ञानाअली जी

## ❀ श्रीआनन्द कन्द की आरती ❀

आरति जानकी लाल की कीजिये ।
आनंद कंद चंद कोटिन की, नैन रसिक रस पीजिये ।।

प्रेम थार करि, सकल सौंज भरि, समयसमय सुख दीजिये।
'कृपा निवास' विलास भवन में, युगल रमण रस भीजिये॥

—श्री कृपानिवास जी

## ❁ श्रृंगार आरती ❁

आरती करत श्रृंगार की, सोहत पिय प्यारी।
सकल सौंज साजे सखी, कर कञ्चन थारी॥
क्रीट मुकुट वर चन्द्रिका, पीताम्बर सारी।
गौर श्याम जोरी बनी, शोभा अति न्यारी॥
कोटि मार लघु से लगैं, कोटिन रतिवारी।
चितवनि दोउ की माधुरी, रस जन हितकारी॥
अगणित बाजैं बाजने, नृत्यत नर नारी।
'कृपा निवास' राजैं भले, दासी बलिहारी॥

( २ )

आरति साजि सखीजन ल्याई।
कनकथार सुकुमार ज्योति छबि, जगमग मन्दिर आई॥
बाजत ताल तान वीणादिक, घंट मृदंग बजाई॥
नाचत गावत कंकण किंकणी, नूपूर सुख सहनाई॥
व्यजन चँवर गहि मुकर सहचरी, सुघर सुछत्र फिराई॥
सूरजमुखी मुकुर कर कोई, प्रेम प्रमोद वढाई॥

वारति जल पट प्राण निछावरि,हरषि निरखि बलि जाई॥
'कृपा निवास' श्रीजानकी वल्लभ, जै जै धुनि सरसाई॥

—श्री कृपानिवास जी

( ३ )

सखि आरति करु रस प्रेम भरी।
श्रीप्रिया प्रियतम को श्रृङ्गार करी॥
मणिमयथारसखिनकर राजत,वाती रवि शशि द्युतिनिदरी॥
बाजत भेरि, निशान, दुन्दभी, झांझ शंख करताल घरी॥
नाचहिं गान करतसखि थेई थेई,सुमन मालमणि होत झरी॥
'श्रीरामचरण'सियरामरूप लखि,सखि आनंद रससिंधु परी

—श्री रामचरणजी करुणासिंधु जी

( ४ )

सुन्दर वदन विलोकि कै, नयनन फल लीजै।
श्रीजानकी वल्लभलाल को, सखि आरति कीजै॥
कुण्डल ललित कपोलना, झुकि अलक विराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावना, गजमुक्ता भ्राजै॥
पाग बनी शिर सोहनी, चपकन जरतारी॥
पट्को हैं पचरंग को, मणि जड़ित किनारी॥
श्रीसियाजू के सोहे लालचूनरी, रवि ज्योति लजावै॥
'श्रीरसिक अली जू' की स्वामिनी,भूषण छवि छाजै॥

—श्री रसिक अली जी

सिय सियवल्लभलाल की, सखि आरति करिये।
दम्पति छबि अवलोकि के, हिय नयनन धरिये॥
अंग अनूप सुहावने, पट भूषण साजें।
नेह भरे दोऊ रसिक, सुभग सिंहासन राजें॥
मंद-मंद मुसुकाय के, सिय गल भुज डारी।
ललकि लई उर लाय, प्राण प्रियतम निज प्यारी॥
ललना गण बड़भागिनी, लोचन फल पावैं।
सेवहिं भाव बढ़ाय के, नित नव गुण गावैं॥
चँवर छत्र कोउ लिये. बाजने विविध बजावैं।
प्रेमलता उर उमँगि, सुमन नचि नचि बरसावैं॥

—श्री सियालाल शरण जी 'प्रेमलताजी'

## ❀ छविधर श्रीराम की आरती ❀

नख सिख छबिधर की।
आरती करिये सियवर की॥
लाल पीत अम्बर शुभ राजै, मुख निरखत शारद शशिलाजैं॥
तिलक झलक भालन पर भ्राजै, कुमकुम केशरकी···आरती॥
कर्णफूल कुण्डल झलकत है, चन्द्रहार मोती हलरत है।
कर, कंकणकी द्युति चमकत है, जगमग दिनकरकी···आरती॥
मृदु तरवन में अधिक ललाई, हास विलास न कछु कहिजाई
चितवनकी छबि अतिसुखदाई, मनही मन फरकी···आरती॥

सिंहासन पर चँवर ढुरत हैं,झाँझ बजत जय-जय उचरत हैं।
सादर अस्तुति देव करत हैं,लुटरनि अनुचर की—आरती ॥

—श्री काष्ठजिह्व देव स्वामी जी

## ❀ श्री राम आरती ❀

जगमग जगमग ज्योति जगी है।
श्रीराम आरती होन लगी है ॥

कंचन भवन रतनसिंहासन,दासन डासै झिलमिल डासन।
तापर राजत जगत प्रकाशन,देखत छवि मति प्रेमपगी है॥

—श्रीराम आरती होन लगी है।

महँकत धूप वरत महताबी,झलकत कुंडल रबि-छबिदाबी
अंग अंग सुन्दरता फाबी, आनन्द की सरिता उमगी है ॥

—राम आरती होन लगी है।

घंटा घड़ी मृदंग बजावत, नूपुर पग धरि नाचत गावत।
पूरत शंखहि चँवर डोलावत,सुनतहि दूरि बलाय भगी है॥

—राम आरती होन लगी है।

रूप देखि जननी हरषत है,अंजुरिन'देव'सुमन वरषत है।
करि दण्डवत चरण परसत है,सुमति रामके रंग रंगी है॥

—राम आरती होन लगी है।

—श्री काष्ठजिह्वदेव स्वामी जी

## ❀ श्रीराम स्वामी की आरती संस्कृत में ❀

जयदेव ! जयदेव ! जय राम स्वामिन् !
तारय भवजलमग्न शुभ करुणा शालिन् ।।टेक।।

कलये त्वां सुखरूपं श्रित मानुष रूपम् ।।प्रभु०।।
व्याप्तं चिदचिद्रूपं कोशलपुर भूपम् ।।जय०।।१।।

हृतमुनि जायाशापं दैत्यान्वय तापम् ।।प्रभु०।।
वन्देऽभक्त दुराप खण्डित शिवचापम् ।।जय०।।

नीलपयोद शरीरं परिहित मुनि चीरम् ।।प्रभु०।।
त्रिभुवन जयिनं वीरं नमामि रणधीरम् ।।जय०।।

रघुकुल कैरव चन्द्रं शुद्धं गततन्द्रम् ।।प्रभु०।।
दशमुखिहस्ति मृगेन्द्रं प्रणमितदेवेन्द्रम् ।।जय०।।

सर्वामङ्गल हरणं भव सागर तरणम् ।।प्रभु०।।
प्रणतस्यैकं शरणं स्मरामि ते चरणम् ।। जय० ।।

मदनमनोहर वेषं कुञ्चित मृदु केशम् ।।प्रभु०।।
नित्य विभूति महेशं लीलारशिकेशम् ।।जय०।।

सरयू पुलिन विहारं वन्दे गुणपारम् ।। प्रभु० ।।
'रघुवर' हृदयाधारं नौमि गुणागारम् ।। जय० ।।

स्वामी श्री रघुवराचार्य जी महाराज
वेदान्त केशरी शेष मठाधीश

## ❀ श्री श्याम सलोने की आरती ❀

आरती उतार ले तूँ आरती उतार ले।
घर में श्याम सलोनो आयो आरती उतार ले ॥
मनमोहनकी मोहनि मूरति, भरि भरि नयन निहार ले॥आ०
तन-मन-धन जीवन सरवस तूं, प्रभु चरणों पर वारले॥आ०
स्नेह सिंहासन प्यारकी पूजा, प्रियतम तेरी स्वीकारले॥आ०
यह अवसर फिरफिर नहिंमिलता, मनमें खूब विचारले॥आ०
बड़े भाग्य से दरशन पाया, अपनी बाजी मार ले ॥आ०
श्रद्धा सुमन भेंट भक्ति की, चित चन्दन तैयार ले ॥आ०
टुटा फुटा दे जो मन भावे, लोक लाज भय टार ले आ०
जनकलली रघुवर का दरशन, करके जन्म सुधार ले ॥आ०
गा गा करके गीत मनोहर, प्रभु का नाम पुकार ले॥ आ०
हुलसि हुलसि हरिके गुण गाले, सुधबुध सकल विसारले॥आ०
जनम जनम युग युग की आशा, मधुर मंगलाकार ले ॥आ०
'प्रेमनिधि' अब प्रभु चरणों का, परिपूरण तूँ प्यार ले ॥आ०

## ❀ चितचोर श्री दुलहा सरकार की आरती ❀

नव दुलह चितचोर की, आरती करु प्यारी।
कोशल राज किशोर की, आरती करु प्यारी ॥
शिर मौरिया लहरावहिं हो, सेहरा लटकाये।
मन्द मन्द मुसुकावहिं हो, सिय संग सुहाये ॥

दुलहा दुलहिन आज, एक सिंहासन राजें।
सरसत स्नेह अपार, विभूषण सुन्दर साजें ॥
आपस में मन मुदित परस्पर बलि बलि जावें।
निरखत हरखत आलि, सुमन सुरतरु बरसावें ॥
आनन्द अपरम्पार, वारि तन मन धन दीजै।
करहु मंगलाचार, धन्य जीवन फल लीजै ॥
नाचहु गावहु गीत, घंट घड़ियाल बजाओ।
'प्रेमनिधि'करि प्रीति,प्रिया प्रियतमहि रिझाओ॥

## ❀ श्री दुलहा सरकार की आरती ❀

श्री दुलहा सरकार की सखि आरती करिये।
प्रेमिन के हियहार की, सखि आरती करिये ॥
मन्द मन्द मुसुकात मनोहर, शिर मौरिया रसदार की…
छबि लखि बलिहरिये……श्री दुलहा० ॥
रसमाते लोचन रतनारे, कहर करत कजरार की……।
चितवन मन हरिये……श्रीदुलहा० ॥
कानन में कुंडल झलकत है,अलक जुलुफ घुंघरालकी…
फँसि फिर न बहरिये………श्री दुलहा० ॥
दुलहिन दुलहा दोउ बिराजत, सुषमा अपरम्पार की…
रति काम निदरिये………श्री दुलहा०
अति आनंद तन मन-धन वारत,अखियन के जयकार की

सुर सुमन की झरिये………श्री दुलहा० ॥
नाचत गावत छटा निहारत, घड़ी घंट करतार की…
धुनि गगन घहरिये ………श्री दुलहा०
लखि शोभा मन मुदित उतारत, आरती रसिक उदारकी
चरणन में परिये………श्री दुलहा०
'प्रेमनिधि' प्रिय प्यारी प्रमुदित, दोउ दोऊन के प्यारकी
प्रीति न विसरिये………श्री दुलहा० ॥

## ( प्रिय पाहुना की आरती )

प्रिय पाहुना की आँरती उतारू ऐ सखी ।
चारों दुलहा की आरती उतारू ऐ सखी ॥
मन मोहना की आरती उतारू ऐ सखी ।
चित चोरना की आरती उतारू ऐ सखी ॥
दुलहिन श्री मिथिलेश दुलारी ।
दुलहा दुलरुआ श्री अवध बिहारी ॥
भरि भरि नयना निहारू ऐ सखी । प्रिय० ।
व्याह विभूषण अंग अग साजैं ।
मणि मण्डप मंगलमय राजैं ॥
तन मन धन न्यौछारू ऐ सखी । प्रिय० ।
रस बरसत रसिकन सुखकारी ।
मुसुकन मन्द मधुर मनहारी ॥

छिन पलहूँ न विसारू ऐ सखी । प्रिय० ।

शेहरा मौर नयन कजरारे ।
'प्रेमनिधि' प्रेमिन के प्यारे ॥
निशि दिन हिय विच धारू ऐ सखी । प्रिय० ।

## ❀ श्री नवलवर की रंगीली आरती ❀

रंगीली आरती करू नीकी ।
नवलवर नौशेय दुलहिनजी की ॥ टेक ॥
पगतल ललित संयुक्त महावर, रंजित नख अवलीकी ॥
वसन वसन्ती, मुकटी लसन्ती, सारी मोल घनी की ॥
मोर मौरिकी, छहर छौरिकी, दामिनि द्युति करै फीकी ॥
मुख सुछबि की, सींव बनी की, मुसकनि वृष्टि अमी की ॥
'मोदअली' की सरबस ही की, झाँकी सिय सिय पी की ॥

—श्री मोदलता जी

## ❀ श्री किशोरी जी की आरती ❀

आरती जनकलली जू की कीजै ।
सुवरन थार वारि घृत बाती, तन निज वारि रूपरस पीजै ॥
गौरवरण सुन्दरतन शोभा, नखशिख छबि नैननि भरि लीजै ॥
सरसमाधुरी' स्वामिनि मोरी, चरण कमल में चित नित दीजै ।
—आरती जनकलली जू की कीजै ॥

—श्री सरस माधुरी जी

## ❀ श्री जानकी जू की आरती ❀

आरती कीजै जनकलली की ।
राम मधुपमन कमलकली की ॥

रामचन्द्र मुख चन्द्र चकोरी ।
अन्तर साँवरि बाहर गोरी ॥
सकल सुमंगल सुफल फलों की ॥आरती०॥

पिय दृग मृग जुग बन्धन डोरी ।
पीय प्रेम रस० रासि किशोरी ॥
पिय मन गति विश्राम थली की ।।आरती०॥

रूप-राशि गुणनिधि जगस्वामिनि।
प्रेम प्रवीण राम अभिरामिनि ।।
सरबस धन 'हरिचन्द' अली की ॥आरती०॥

—श्री भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी ।

## ❀ श्री मन्द मुसकान की आरती ❀

श्री सिया जू की मन्द-मन्द मुसकान ।
होत प्रफुल्लित मन, निरखत छबि, शोभा की लहरान ॥
सुन्दर सिंहासन पर राजै, सेवैं सजनि सुजान ।
उमा-रमादि देव-रमणी सब, खड़ी दरस हित आन।सिया०
मातु सुनैना करति आरती, देत याचकन दान।।सिया०॥

जय-'जयरामदेव' सिया हेरैं, होय सकल कल्याण॥
सिया जू की मन्द-मन्द मुसकान ॥ सिया जू की० ॥

—महाकवि स्वामी श्रीजयरामदेवजी महाराज

## ❀ श्रीरघुनाथ प्रिया जू की आरती ❀

आरति श्री रघुनाथ प्रिया की ।
राम-बाम मिथिलेश सुता की ॥

जो गुणज्ञ यहि चित धर गावैं ।
नाना जग के फन्द नशावैं ॥
दुर्लभ धाम अनूपम पावैं ॥
मृदु मूरति सुख मोदलता की ॥आरति०॥

देव शिरोमणि नित जेहि ध्यावैं ।
नारदादि मुनि ध्यान लगावैं ॥
विन प्रयास मन वांछित पावैं ।
जीवन मूरि गिरीश शिवा की॥आरति०॥

गाय-गाय नर-मुनि-सुख गेहा ।
तत्त्व पाय विनसै सन्देहा ॥
पुनि यह लोक न धारत देहा ।
दहन कलुष दल सद्गतिदा की ॥आरति०॥

सोइ विज्ञान रूप सोइ पावन।
सोइ जग पूज्य लोक दुख दावन।
गुणातीत सोइ हरि मन भावन॥
'जगदम्बे' पद दृढ़रति जाकी ॥आरति०॥
—श्रीजगदम्बा प्रसादजी रचित 'श्रीजानकी जन्म विलास से'

## ❀ आरती श्री जनक लली की ❀

आरति जनकलली की कीजै।
नख-शिख-अंग बलैया लीजै॥
श्रीमिथिलेश—दुलारी—प्यारी।
राजत अनुपम शोभा भारी॥
मिथिला-महल-बिहारिणि की जै ॥आरती०॥

आदि शक्ति अविनाशिनि माया।
कल्याणी---करुणामयि—छाया॥
दुःख भंजनि जन रंजनि की जय। आरती०।

रामप्रिया महारानी मेरी।
"रमण" चरण वन्दौं नित तेरी॥
जगतारिणि सिय—स्वामिनि की जय॥
आरति जनक लली की कीजै॥ आरती०॥

—पं० श्रीजगन्नारायण झा "रमण" शास्त्री

# ❀ श्री मिथिलेश लली जू की आरती ❀

आरति श्री मिथिलेश लली की।

श्री रघुवर रस-प्रेम भरी की ॥

आह्लादिनी सच्चिद् वपुधारिणी।

श्रेय कारिणी-क्लेश हारिणी ॥

जगदम्बा शुचि स्ववश विहारिणी।

राम चन्द्र मुख कंज अली की·········आरती०।

अमित कोटि ब्रह्माण्ड नायिका।

सन्तत शरणागत सहायिका ॥

दीन-हीन जन सुख विधायिका।

गौर वरण तनु चम्पकली की·········आरती०

सिंहासन अति दिव्य, विराजै।

छबि निधि रूप अनूपम भ्राजै ॥

उमा-रमा-रति-शचि-शशि लाजै।

अखिल दोष दुख द्वन्द दली की·········आरती०

करुणा--दया--कृपा रस खानी।

आश्रित जन तारिणी वरदानी ॥

राम वल्लभा वेद बखानी।

प्रणत पालिनी परम बली की·········आरती०

जनक सुनैना हृदय हुलासिनी ।
जय श्रीमिथिला धरणि प्रकाशिनी ॥
आदि शक्ति साकेत--विलासिनी ।
'प्रेमनिधि' प्रभु प्रेमपत्नी की········आरती०

—'श्री प्रेमनिधि जी महाराज'

## ❀ सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजू की आरती ❀

श्री चन्द्रकला जू की आरती करिये ।
कंचन थार कपूर की वाती.
साजि सुमन—तुलसी—दल धरिये ॥
चँवर--छत्र-- मुरछल लै ठाढ़ी,
सखियन को लखि आनन्द भरिये ।
झांझ—मृदङ्ग—करताल बजाओ,
घड़ी--घंट धुनि सुनि मन हरिये ॥
सिय-सिय-पिय की परम दुलारी,
चन्द्रप्रभाललो जयति उचरिये ।
इनकी कृपा—कटाक्ष पायके,
"प्रेमनिधी" प्रिय सियवर वरिये ॥
श्री चन्द्रकला जू की आरती करिये ।

—:०:—

## ❀ प्रेम भरी आरती ❀

आरती करति प्रेम भरि सखियाँ,
जनकलली रघुबर-छबि पागी।
आनन्द सिंधु उमगि छबि छायो,
गावति नृत्यति तन मन रागी।
बार-बार कुसुमावलि छूटति,
जयति महाधुनि घोष सुजागी।
'रसिकअली' रससिंधु मनोरथ,
भँवर तरंग उठत लय लागी ॥

—श्री रसिकअली जी

## ❀ श्रीसीतारमणजी की आरती ❀

जय सीतारमणा प्रभु जय सीतारमणा।
भक्तजनों के स्वामी, सन्त जनों के स्वामी।
जनसंकट हरणा, ॐजय सीतारमणा ॥टेक॥
नवदूर्वादल श्याम, क्रीट मुकुट धारी ॥ प्रभु क्रीट० ॥
पीताम्बर बनमाला(२) शोभित सुखकारी ॥ॐ जय०॥
वामांगे जगदम्बा राजित,सीता सुकुमारी ॥प्रभुसीता०॥
श्रीमिथिलेश दुलारी (२) रघुबर मनहारी ॥ ॐजय०॥
जयलक्ष्मण जयभरत शत्रुहन,जयजय हनुमाना ।प्रभुजय०

सेवक सखा सखीजन (२) निरखे घनश्यामा ॥ॐजय०॥
मंगलमूर्ति मनोहर, निरखत हरषाऊँ ॥ प्रभु निरखत०॥
आरती नाथ! उतारूँ(२) तन मन धन वारूँ ॥ॐजय०॥
सीतावर प्रभु विनय हमारी, अब उरमें धारो॥प्रभुअब०॥
'प्रेमनिधी' उमगाओ, प्रेमानंधी लहराओ।
भव संकट टारो ॐ जय सीतारमणा ॥...

—श्री प्रेमनिधि जी

## ❀ श्रीजानकी वल्लभलाल जू की आरती ❀

जयति श्री जानकी वल्लभ लाल।
करूँ तव आरती होऊँ निहाल॥
मधुर मूरति दोऊ श्यामल गौर।
सुछबि शृंगार मनहुँ इक ठौर॥
नहि रे इनकी उपमा कोउ और।
निरखि रति लजै, मदन मद तजै, अंग-अंग सजै,
सुभूषण वर मुक्तामणि माल...करूँ तव आरती०॥१॥
शीश पर क्रीट मुकुट झलकै,
कान में कर्णफूल चमकै,
कपोलनि झूलै कुटिल अलकै।
नयन कजरारे, मोहनिया डारे, सरस रतनारे,
सुचन्दन कुमकुम केशर भाल...करूँ तव आरती०॥२॥

परसपर दोउ चकोर दोउ चन्द,

प्रिया प्रिय अनुपम सुषमा कन्द,

निरखि प्रेमिन हिय परमानन्द ।

मंद मृदु हँसन, रुचिर द्युति दशन, मनोहर वसन,

दोऊ सोहै गल बहियाँ डाल...... करूँ तव आरती०॥३॥

बजत वीणा सितार मिरदंग,

सबै मिलि गावत सहित उमंग,

होत पुलकायमान अंग अंग ।

रंग जब चढ़त, प्रेमहिय बढ़त, नयन जल झरत,

मधुर स्वर गावत दै दै ताल... करूँ तव आरती०॥४॥

स्वामिनी स्वामी करुणागार,

प्रणतजन 'रामेश्वर' आधार,

जोरि कर विनवौं वारम्वार ।

नहि रे कुछ बनत, नेम जप वरत, रहूँ पद निरत.

यही वर माँगौं परम कृपाल... करूँ तव आरती०॥५॥

—श्री रामेश्वर सिंह जी

## ❀ श्री प्रिया प्रियतम की आरती ❀

गाओ गाओरी हां हां गाओ गाओरी ।

प्रिया प्रियतम की आरती गाओ ॥टेक॥

आसपास सखियाँ सुखदैनी,सजि नव सप्त शृङ्गारसुनैनी।

वीण सितार लिये पिकबैनी,गाइ सुराग सुनाओ॥प्रिया०।

अनुपम छवि धरि दम्पति राजत, नील-पीतपट भूषण भ्राजत
निरखत अगणित रवि-शशि लाजत, नैननको फलपाओ।प्रि०
नीरज नैन चपल चितवन में, चन्द्रवदन मधुरे मुसुकन में।
कारे घुंघरारे जुलुफन में, आपनो मन अरुझाओ।प्रिया०।
कंचनथार संवारि मनोहर, घृत-कर्पूर सुवाती ज्योतिधर।
मुरछल चँवर लिये'रामेश्वर'हरषि सुमन बरसाओ।प्रिया०।

—श्री रामेश्वर सिंह जी

## ❀ श्री युगलछबि की आरती ❀

आरती करु नीकी जुगल छबी की।
गौर वरण श्रीजनकलली की, श्याम वरण सिय पी की॥
मुकुट चन्द्रिका में द्युति दमकत, अगणित सूर्य शशी की॥
भाल विशाल तिलक की शोभा, अधरन मन्द हँसी की॥
सुन्दर अंग-अंग छबि राजत, कोटिन काम रती की॥
युगल रूप पटतर में सब ही, उपमा हो गई फीकी॥
'रामेश्वर'लखि ललित युगल छबि, हुलसत हिय सबही की॥

—श्री रामेश्वर सिंह जी

## ❀ श्री सिया प्यारे की आरती ❀

सिया प्यारे की होय आज आरती रे॥टेक॥
छवि अपार, अलि हजार, सोहैं कर कनक थार।
बाती कर्पूर चार वारती रे···सिया प्यारे की०॥१॥

चन्दन चौखट किवाँर, कंचन मणिकी दीवार ।

छवि निहार नैन नहिं टारती रे···सिया प्यारे की० ॥२॥

छहरत छवि बेशुमार, प्यारी प्रियतम बहार ।

दम्पति के देखि प्यार प्यारती रे···सिय प्यारे की० ॥

लतिका सनेह भने, उपमा न कहत बने ।

जीवनधन वार वार वारती रे···सिया प्यारे की० ॥

—श्री स्नेहलता जी

## ❀ श्री जनकपुर धाम में आरती ❀

आरती उतारती जनकपुर की नारियाँ ।

जनकपुरकी नारियाँ हो सिय पिय मतवारियाँ ॥

लीन्हे कर कनक थार, निरखि रूप वार वार.

तन-मन विसराती जनकपुर की नारियाँ ॥

गावत आनन्द गीत, उभरत चहूँ ओर प्रीत ।

मंगल उच्चारती जनकपुर की नारियाँ ॥

'स्नेहलता' लखि विभोर, लाल चले महल ओर।

पुनि पुनि निहारती जनकपुर की नारियाँ ॥

—श्री स्नेहलताजी

## ❀ आरती जननी लेत बलैयाँ ❀

जननी करत आरती राम को ।

कंचन थार आरती सजि के, शोभा लखि छवि धाम की ।

मणिगण वारि,वारिजल मुख लखि,तृण तोरत अभिरामकी
वार-वार विधु वदन निरखिके,लेति बलैया श्याम की ।।
'रसमाला'रघुनाथ कुंवर छबि, निरखि रही गुण ग्रामकी।।

—श्री रसमाला जी

## ( श्रीअवध में दुलहिन दुलहा जी की आरती )

मुदित मन आरती करै माता ।
कनक वसन मणि वारिवारिकरि,पुलक प्रफुल्लित गाता।।
पाँ लागिनि दुलहियन सिखावत,सरिस सासु शत साता।
देहिं असीष ते वरष कोटि लगि, अचल होहु अहिवाता।।
राम सिया छबि देखि युवतिजन, करहिं परस्पर बाता।
अब जान्यो सांचहुँ सुनहु सखि, कोविद बड़ो विधाता ।।
मंगलगान निशान नगर नभ, आनन्द कह्यो न जाता ।।
चिरजीवहु अवधेश सुअन सब, तुलसिदास सुखदाता ।।
मुदित मन आरती करै माता ।।

—गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी

## ❀ श्रीअवधलला जू की आरती ❀

करु आरती अवध ललनमा की ।
प्रिय पाहुन सिया के सजनमा की ।।टेक।।
नील कमल घन श्याम सलौना ।
मुनि-मन-मोहन छबि-ललचौना ।।

चंचल चितवन अवध के छौना।
छबि-निधि श्यामल-वदनमा की ॥करू०॥
श्रीमिथिलेश--लली–सुकुमारी।
रघुनन्दन की प्राण-पियारी॥
राजत अनुपम शोभा भारी।
रति-पति-मन-ललचनमा की ॥करू०॥
मिथिलानी--सुन्दरि--सुकुमारि।
रघुनन्दन की सरहज—सारी॥
गावति चुनि-चुनि मंगलगारी।
सुनि हुलसत हियरा पहुनमा की ॥करू०॥
"मोदनिधि" बहनोई के नाते।
साले भाव से गारी गाते॥
सुनि सुनि पाहुन मन--मुसुकाते।
लखु मङ्गल जनक भवनमा की ॥करू०॥

—"रसमोदनिधि"

## ❀ श्री युगल झाँकी की आरती ❀

आरती अवध बिहारी की।
दयामयि जनक दुलारी की॥
मुकुट की शोभा अमित अपार
चन्द्रिका मणि मण्डित-सुखसार॥

मनोहर उर हीरन के हार।
विभूषण अंग–अंग शृङ्गार ॥
ललित छवि मुनिमन हारी की ॥ दयामयि जनक० ॥
कपोलन कुण्डल की झलकान।
मधुर मुख मन्द-मन्द मुसकान॥
सरस चितवनि आनन्द निधान।
सदा सेवा में श्री हनुमान ॥
विजय हो धनुसर धारी की ॥ दयामयि जनक० ॥
रहैं ब्रह्मादिक शीश नवाय।
मुनीश्वर विनती रहे सुनाय ॥
कहे "जयरामदेव" गुण गाय।
कृपा अमृत दीजै वरसाय ॥
सदा भक्तन सुख कारी की ॥ दयामयि जनक दुलारीकी॥

—श्री स्वामी जयरामदेवजी महाराज।

## ❀ विवाह आरती ❀

आरती सिया रघुनन्दन की।
नवल-वर दुलहा–दुलहिन की ॥
कनकमय मण्डप अति जगमग।
जड़ित अनमोल रतन मणि-नग ॥
सुचित्रित चित्र--विचित्र--सुभग।
विलोकत विधि समेत सुर ठग ॥

सुकदली-द्वार, कलश-मनहार, दीप दुतिकार, फूल-दल-हार
पताका—तोरण वन्दन की ॥ १ ॥ आरती सिया०

चतुर्दिक सोहैं सखी—अपार ।
सु गावहिं--गीत—मंगला चार ॥
विराजैं बीच युगल सरकार ।
विग्रहुती सकल साज--शृङ्गार ॥

माथेमौरी-मौर, ग्रन्थिपटछोर, अंशभुजजोर, तकनि दृगजोर
दम्भ रति--"रमण"—निकनन्दन को ॥२॥
आरती सिया रघुनन्दन की ।

—पं० जगन्नारायण झा शास्त्री "रमण"

## ❀ चितचोर दुलहा की आरती ❀

करू आरती दुलह चितचोर की० सजनी करू आरती०

कुटिल अलक भ्रमरावलि सोहै ।
मुख—पंकज अरुझत मन मोहै ॥

कजरारे दृग कोर की—सजनी करू आरती०

चन्द्र वदन कल मन्मथ लाजै ।
नख-सिख रुचिर विभूषण साजै ॥

सिय मुख चन्द्र चकोर की० ॥ सजनी करू आरती०

कंचन थार कपूर की बाती ।
आरति करै सब प्रेम रसमाती ॥

नैनन छल—छल लोर की० ॥ सजनी करू आरती०

16732

चिर रहै जोरी चाँद--चकोरी।
मति 'करील' भई भाव--विभोरी॥
चलत विलोचन कोर की॥ सजनी करू आरती०

—पं० श्रीबाँके बिहारी झा "करील" ( बक्सर )

## ❀ श्री रघुनन्दन दुलहा की आरती ❀

सखि हे ! आरती उतारू रघुनन्दन दुलहा के।
हीरा के हार मौर लर मोती है।
चपकन० चारू विग्रहुती धोती हे॥
सोहे चरण महावर कर कंगन दुलहा के॥१॥ सखी हे०
नयन कजरवा अलक घुंघुराली काली।
कानमें कुण्डल सोहे ओठवापर पानके लाली॥
चमके भालपर लाल-लाल चन्दन दुलहा के॥ २॥
मन्द मुसुकान भौंह तिरछी तकान हे।
जाकी कोई उपमा न सकल जहान हे॥
सखि हे ! काम कोटि वारौं अंग अंगन दुलहा के॥३।
धन्य धन्य मिथिला को सुकृत महान हे।
सियाके कृपा सँ पौलौं एहन मेहमान हे॥
अइसन बाँधू नहीं छूटे गँठ बन्धन दुलहा के॥ ४॥
सखि हे ! आरती.........

— श्री रामप्रतापजी, नया बाजार, बक्सर

## ( मिथिलामें सखियों द्वारा उमंग भरी आरती )

जनक नगर के सखिया हे, प्रभु आरती सजाउ ।
एहन दोसर के मुरतिया हे, मन-हुलसा मेटाउ ॥
श्यामल वरण किशोर हे, प्रिय नयना जुड़ाउ ।
भव्य भूमि अछि मिथिला हे, प्रभु स्वागत सजाउ ॥
धूप-दीप-फुल-फल लै हे, मणि माला पहिराउ ।
चौमुख दीप सुसज्जित हे, पीत वसन मंगाउ ॥
कनक थार--दूर्वादिल हे, शुचि ब्राह्मण मंगाउ ।
"हरे कृष्ण" प्रिय पाहुन के, सखी आरती देखाउ ॥

—रचयिता श्रीहरेकृष्णजी मल्लिक

## ❀ श्री जानकी वल्लभ जू की आरती ❀

श्रीजानकी वल्लभ लालकी, सखी आरति करिये ।
धुप-दीप-नैवेद्य हो, अति प्रेम से धरिये ।
शिर सोनेको छत्र हो, चँवरादिक ढ़रिये ।
बाजत झाँझ मृदङ्ग हो, जय जयति उच्चरिये ॥
सिया सहित श्रीराम के, दोउ चरणन परिये ।
गाय गाय गुण गान हो, भवपार उतरिये ॥
"प्रेमनिधी" प्रभु चरणों से कबहूँ नहिं टरिये ।
नेह भरी नित नेमसे, शुभ आरती करिये ॥

## ❀ श्री सिया साजन जू की आरती ❀

सुघर सलोनवा के, आरती उतारू रे।
सिया के सजनवा के, आरती उतारू रे॥
आऊ मन मोहना के, माधुरी निहारू रे।
दुलहा दुलरुआ के, मौरिया संवारू रे॥
चोखी चितवनियाँ पै, तन–मन वारू रे।
मन्द मुसकनिया कैं, छिन न विसारू रे॥
अनूपम रूप आली, हिया विच धारू रे।
सिया-सिया पियवा के, सरस सिंगारू रे॥
अंग-अंग सुधा रस, वरसै सु चारू रे।
लखी-लखी छाकी सखियाँ, आनंद अपारू रे॥
जयति--जयति जय, जयति उचारू रे।
'प्रेमनिधी' प्राण-धन, प्रीतम हमारू रे॥
सुन्दर सलोनवा के आरती उतारू रे॥

## ❀ श्री दुलहा सरकार की आरती ❀

( गुजराती राग पर )

मैं तो आरती उतारती रे, दुलहा सरकार की।
मैं तो माधुरी निहारती रे, दुलहा सरकार की॥
दुलहा सरकार मेरे प्राणों से प्यारे।
दुलहा सरकार मेरे नयनों के तारे॥
मैं तो सेवा स्वीकारती रे, दुलहा सरकार की।

दुलहा सरकार की है शोभा निराली।
दुलहा सरकार की है चाल मतवाली ॥
मैं तो जीवन वारती रे' दुलहा सरकार की ॥
सिया जू के संग सिया दूलह बिराजे।
अङ्ग-अङ्ग--वसन विभूषण साजै ॥
आँखें पलकें न टारती रे–दुलहा सरकार की० ॥
'प्रेमनिधि'प्रेममें विभोर आज होगई।
प्रीतम के प्यार में हैं लोक लाज खोगई॥
सब सखियाँ, पुकारती रे–दुलहा सरकार की०॥

## ❀ श्री मन मोहना की मस्त आरती ❀

मनमोहना की आरती उतारती रे, मस्ती में झूमती।
प्यारे पाहुना की आरती उतारती रे, आनन्दमें फूलती ॥
मन्द मुसुकनिया मैं देखिके लुभानी।
जुलुमी जुलुफिया की जालमें फँसानी ॥
मैं तो माधुरी मूरति निहारती रे--मस्ती में झूमती··
कजरारी आँखों ने जादू चलाया।
चोखी चितवनिया ने चित्त चमकाया ॥
मैं तो तन-मन-प्राण बलिहारती रे···मस्ती में झूमती ॥
साँवरे सजनवा से नाता मैं जोड़ती।
दुनिया की माया मैं तिनकेसी तोड़ती ॥
में प्रियतम को प्यार से पुकारती रे–मस्ती में झूमती ॥

सिया जु के संग राम रसिया विराजे।
भूषण--वसन--साज अनमोल साजे॥
"प्रेमनिधी" में डुबाकियाँ मारती रे--मस्ती में झूमती॥
मनमोहना की आरती उतारती रे--मस्ती में झूमती॥

--श्रीप्रेमनिधिजी महाराज

## ❀ श्री सियाराम जी की आरती ❀

आरती करहु राम सिया जोरी।
मृदुल मधुर मुसुकान मनोहर,
हृदय रसिक जन मन चित चोरी॥
अंग-अंग छवि रंग विराजत,
राम श्याम सिय सोहति गोरी।
अगणित काम लजात लखत छबि,
भागत दूर चलै न बरजोरी॥
शिर--मणि मुकुट-चन्द्रिका राजत,
सोहत भाल तिलक विचरोरी।
घड़ी--घंट--करताल बजावत,
जय जयकार मचत चहुँ ओरी।
नाचहु गावहु ध्यान लगावहु,
सादर विनवत "ललित किशोरी"

--पं० श्री ललित किशोरीदासजी शास्त्री

## ❁ शृंगार आरती गुजराती ❁

जय सियवर स्वामी प्रभु जय सियवर स्वामी ।
कोशलनाथ कृपालु (२) प्रभु अन्तरयामी ॥ ॐजय० ॥
झांकी अनुपम नाथ अमने, रुदिया मां भावे॥प्रभुरुदिया०॥
सुन्दर रूप तमारूँ (२) मुनिमन ललचावे ॥ ॐजय०॥
श्रीसीताजी सहित बिराज्या, धनुष बाणधारी॥प्रभुधनुष०॥
राजीब नयन रसीलां(२)भक्त विपति हारी ॥ॐजय०॥
भूषण वस्त्र सोहामणां, प्रभु क्रीट मुकुट शोभे ॥प्रभु०॥
पीताम्बर वनमाला(२) निरखत मन लोभे ॥ॐजय०॥
कर जोड़ी प्रभु विनवे नित्ये, अंगद हनुमाना॥प्रभुअंगद०॥
दरशन दिव्य तमारां(२) अर्पे सुखधामा ॥ ॐ जय० ॥
धनुष बाण श्रीतिलक मनोहर, अति शोभा आपे॥प्रभुअति०
रत्न जड़ित सिंहासन(२) दुखडाँ सौ कापे ॥ ॐजय० ॥
'प्रेमनिधी' उर प्रेम उभरे, वर्णन शुं करिये ॥ प्रभु०॥
प्रेम सुधारस भीना (२) सीतावर वरिये ॥ ॐ जय० ॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❁ आरती गुजराती श्री जनकपुरधाम में ❁

आजे जनकपुर रामजी पधारिया,
आनन्दनो दरियो लहेराय,
रामजीनो आरती उतारिये ॥टेक॥

गोरां गोरां जानकीजी, शांमला सरकार छे

जोई जोई हैयूं हरषाय, रामजी नी आरती उतारिये ॥

रतन सिंहासने रामजी विराजता,

संगमाँ सीताजी सोहाय, प्रभुजीनी आरती उतारिये ॥

कोमल छे काया कमल नयनो मां माया,

चोरी चोरी चितडुं मलकाय, रामजीनी आरती उतारिये ॥

सखियाँ सलूँणी, सखा साह्यबा ने सेवकों,

अमृतना मेऊला वरसाय, रामजीनी आरती उतारिये ॥

युगल स्वरूपनी अनूप छटा जोई ने,

'प्रेमनिधि' आभे लहेराय, रामजीनी आरती उतारिये ॥

— श्री प्रेमनिधि जी

## ( आरती गुजराती श्रीरामजन्म की )

जय रघुकुल राया प्रभु जय रघुकुल राया ।

कौशल्या गृह प्रगटचा (२) करी करुणा दाया ॥ॐजय०॥

नवमी तिथि मधुमास सुन्दर, ग्रह नक्षत्र आव्यां॥प्रभुग्रह०॥

अवधनगर माँ आजे [ २ ] सहु सुख सरसाव्याँ॥ॐजयरघु०॥

सजी सजी सुन्दर साज सर्वे, नर नारी धावे ॥प्रभु नर०

दशरथ राजमहेलमाँ (२) आनन्द भेर आवे ॥ॐजयरघु०

सजी कंचनना थाल मंगल, वस्तु भरी लावे ॥प्रभुवस्तु०

आरती मातु उतारे [ २ ] प्रेम भक्ति भावे ॥ ॐजय रघु०

बोले जय जयकार सुरगण, सुमन सरस वरषे॥प्रभुसुमन०

अखिल लोकनायकनु (२) बाल रूप निरखें ।।ॐजयरघु०
विप्र धेनु सुर संत धरणी, हरुषित थई भारी।।प्रभुहरषित०
'प्रेमनिधी' प्रभु प्रकटया [२] नर लीला धारी ।।ॐजय०।।

—प्रेमनिधी जी

## ❀ आरती गुजराती परिछन-पुंखवानी ❀

आरती उतारो आजे आरती उतारिये,
रामजी पधारिया छे द्वार,
चालो सखी आरती उतारियेँ ।।टेक।।

मारे आंगणीये अमृतना मेऊला,
आनंद आनन्द अपार, चालो सखी आरती उतारिये।।
मीठी-मीठी गजरोंथी आंखलड़ी ठारिये,
गौर-श्याम शोभे सरकार, चालो सखी आरती उतारिये।।
कंचनना थालमाँ छे दीवेट कपूरनी,
गौ घृतनी पूरो दीपमाल, चालो सखी आरती उतारिये।।
आसो पालवनां तोरण बंधाविये.
फुलडां वेरावो हजार, चालो सखी आरती उतारिये ।।
'प्रेमनिधी' मनना मनोरथ छे पूरिया,
तन मन धन बलिहार, चालो सखी आरती उतारिये ।।

—श्री प्रेमनिधीं जी

## ❀ होरी के खेलारी की आरती ❀

आये अंगनामें होरी के खेलारी रे,सखी आरती उतारू।
आये अंगना में अवधविहारी रे, सखि आरती उतारू॥
अबीर गुलालकी झोरी लिये कर,कंचन की पिचकारी रे।
चन्द्रकलादिक सखियाँ सलोनी,राजत जनक दूलारी रे॥
केशर कुमकुम चन्दन अरगजा,रंग छिरकत सुकुमारीरे।
श्यामल अंग रंगीले छैला, शोभा अजब अपारी रे॥
फागुन रंगराते मदमाते, हुलसत पुलकत भारी रे।
अबीर गुलाल लगाय कपोलन,वरसत, रंग बौछारी रे॥
लीला ललित विलोकत लहरत,'प्रेमनिधी'बलिहारी रे॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ आरती होरी रसरंग भरी ❀

आरती उतारो आली होरी के खेलारी की।
होरी के खेलारी प्यारे अवध बिहारी की।
अवधविहारी प्यारी जनक दुलारी की ॥टेक॥
मदमाते प्यारे रंगराते, मनमानी करते मुसुकाते।
फगुआ गाते डंफ बजाते,केशर कुमकुम अबीरकी झोरी...
रंगभरा हाथ कनक पिचकारी की ॥ आरती उतारो० ॥
इधर ललीकी अली मतवारी,रंग छिरकत देतींहंसि गारी।
जहाँदेखौं तहाँलालीही लाली,लालके गालगु लाल मसलिके

विहसत खड़ी मिथिलेश दुलारी की॥ आरती उतारो०॥
सिय स्वामिनिकी आज्ञा पाई, रही सही सब कसर चुकाई
अवध छयल को नारि बनाई-नाच नचाई धूम मचाई…
छबि लखिलखि तनमन बलिहारी की॥आरती उतारो०॥
जयजयजय-दशरथके लाला, निरखिरूप सब होंहिंनिहाला
वरसत सुमन झरी सुर बाला, 'प्रेमनिधी' परवश प्रेमिनके
जनकललो जय अवध विहारी की।
आरती उतारो आली होरी के खेलारी की॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ रंग भीनी आरती ❀

आरती भीनी नवल गोरी।
दोऊ कर कमलन पिचकारी. कुमकुम केशर रंग बोरी।
दोऊ रस सिंधु मगन रसभीने, सीताराम युगल जोरी।
चन्द्रकला कमला सुभगादिक, कंचन थार भरे रोरी॥
डंफ मृदंग करताल बजावत, सखा सखी चहूँ दिशी दोरी।
चारुशिलादि सप्त स्वर जोरति, लै लै तान सुरस वोरी॥
जय रघुबंश छबीले प्यारे, जय मिथिलेशलली भोरी।
निरखत वरषि सुमन सुर हरषत, मिथिला कंचन खोरी।
नृत्य करत नूपुर धुनि झमकत, 'सियवल्लभ' कहिहो होरी॥
आरती रंग भीनी नवल गोरी॥

—श्री सियावल्लभ शरण जी

## ❀ श्री राजभोग आरती ❀

राजभोग आरती उतारी ।
भोजन पाय सिंहासन बैठे, प्रमुदित प्रियतम प्यारी ।।
आलस भरे निरखि आलीगण, रंगमहल महँ सेजसँवारी ।।
पोढ़े जाइ दोऊ रस छाके, निरखत 'मधुरप्रिया' बलिहारी ।।

—श्री मधुरप्रिया जी

## ❀ शयन सुख आरती ❀

शयन समय सुख आरती कीजै ।
लली लला निरखत सुख लीजै ।।
युगलचन्द्र मुखचन्द्र विलोकत, नयनानंसों अमृतरसपीजै ।।
राम सिया सुख सेज पधारे, महाप्रेम आनन्दरस भीजै ।।
जयति 'कृपानिवास' अली छवि, एक पलक न्यारे न रहीजै ।।

—श्री कृपानिवास जी

## ❀ श्री युगल सेवा सुख ❀

जयति श्री जानकी बल्लभ लाल ।
श्री कनक भवन के रंगमहल, विपुल रंगीली बाल ।।
कोइ गावत कोइ वीण बजावत, कोउ मृदंग करताल ।।
'श्रीयुगलप्रिया' रिझवति दोऊलालन, छविलखीभईसुनिहाल

—श्रीयुगलप्रियाजी

## ❀ शयन की आरती ❀

सजन लगी आरती मृगनैनी ।
कंचन थार कपूर की बाती, गंध सुमन हर लैनी ।।
करहिं आरती छवि अवलोकहिं, गान करत पिक बैनी ।
चँवर छत्र शिर व्यजन ढुरावति, सहचरियां सुख ऐनी ।।
जलझारी शुचि पान डिवन भरि, स्रग सुगन्ध सुखदैनी ।।
सुखसोवहु अब शयन समय भयो, मृदु मुसुकाई दई सैनी ।।
हरषि निरखि छवि पर तृण तोरति, 'मौन' सुधारस ऐनी ।।
—श्री मौन जी ।

## ❀ श्री पर्य्यङ्क आरती ❀

आरती आरति हरण राम की ।
सुरतरु-सुधा-धेनु-चिंतामणी, वरसा पूरण काम की ।।
दीपावलि प्रतिबिम्ब अंग महँ, शोभा सब सुखधाम की ।।
प्रेम मगन अरुझे पलंगपर, कनकलता जनु-तरु तमालकी ।।
'अग्रअली' वरनै युग चन्द्र हि. जानकी जीवन नामकी ।।
--श्री अग्रअली जी ।

## ❀ उत्थापन की आरती ❀

आरती उत्थापन की करिये ।
सुखमय सौंज थार कंचन के, वारत प्राण हरषिउर भरिये ।।
गीत वाद्य मुदनृत्य सुकौतुक, चँवर व्यजन छत्रहिशिरधरिये
'कृपानिवास' श्रीजानकीवरके, रीझि-रीझि दोउपाँयन परिये
—श्रीकृपानिवासजी

## राज्य सिंहासनासीन श्रीरामजीकी आरती

आरती करत कौशल्या मैया ।
कंचन थार बारि घृत बाती, जुगल अंगन की लेत बलैया।।
रतनसिंहासन सुखद सुहावन, राजत दम्पति चारों भैया।।
चँवर मोरछल करत पवनसुत, जय जय बोलत मन हरषैया
'सरसमाधुरी' सियाराम की, बाँकी झाँकी हृदय धरैया।।

—श्री सरसमाधुरी जी

## ❀ श्री वसन्त पंचमी की आरती ❀

है श्रीवसन्त ऋतुराज आज, करु आरती हिलि मिलि अलिसमाज ।।
खेलत रघुवर सिय संग रंग । ऊडत अबीर आनन्द तरङ्ग ।।
पहिरे पट भूषण सुभग पीत । गावत वसन्त भरि प्रीत गीत ।।
जय जयति होत चहुओर शोर। जय जनकलली कोशल किशोर ।।
छूटति कुसुमावलि बार बार । हिय हरषत सरसत सुख अपार।।
तन-मन-धन सरवस प्राणवारि। कृतकृत्य होंहिं यह छबि निहारि ।।
कहे 'प्रेमनिधि' पावन प्रसङ्ग । रहे अमर सदा सुखप्रद वसन्त ।।

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ फूल बंगला की आरती ❀

करु आरती सखि फूल बंगला की ।
सखि साजि सुमन सुभ मंगला की ।।

सिय पिय को फूल बंगलो प्यारो ।
निरखत सुमन सुगन्ध बहारो ।।

हिय हरषत है रस वश छाकी ।।१।। करु आरती० ।।

सुमन दीवार सुमन दरवाजे।
सुन्दर चौखट सुमन के साजे ॥
फूलन की खिड़की जंगला की…॥करु आरती० ॥२॥
फूलन की छत अरु फूलन चन्दोआ।
सुमन सिंहासन फुलन को तकिया।
सुमन बिछौना पंच रंगला की…॥ करु आरती० ॥३॥
नख सिख सुमन शृङ्गार सजाये।
पिय प्यारी राजत मन भाये॥
'प्रेमनिधी' प्रेम मगनवाकी…॥ करु आरती० ॥४॥
—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ श्री रथयात्रा की आरती ❀

रघुनन्दन को रथ आयो है आरती उतारो।
रसिक जनन के मन भायो है, आरती उतारो॥
सोने को रथ जड़े जवाहर, आरती उतारो।
जगमग जगमग ज्योति झलामल आ०॥
चँवरछत्र अरु व्यजन डोलावत,आरती उतारो।
द्वार खड़ो मेरो घर पावन, आरती उतारो॥
जीवन का फल आज मिल्यो है, आरती उतारो।
बड़भागिन को भाग्य खिल्यो हैं, आरती उतारो॥
घृत कपूर की बाती बारो, आरती उतारो।
सुमन माल झरी बरसावो, आरती उतारो॥

राघवजी के ये रथ घोरे, आरती उतारो।
जनकलली के रस में बोरे, आरती उतारो ॥
श्री सियवर सियजू प्यारी की, आरती उतारो।
'प्रेमनिधी' प्रभु बलिहारी की, आरती उतारो ॥

—श्री प्रेमनिधी जी।

## ❀ आरती-श्रावण कुञ्ज--सुहावन की ❀

करु आरती झूलन झूलावन की।
सखी सावन-कुञ्ज सुहावन की।
छाई घटा घनश्याम मनोहर।
चपला चम चम चमकत सुन्दर ॥
रिमझिम-रिमझिम-बादल वरसत।
सिय पिय प्रीति बढावन की...करु० आरती ॥१॥
हरित हिंडोला सुभग सजाये।
लली-लाल लखि हिय हरषाये ॥
झोंका देत सखी हुलसाये।
सुख सनेह सरसावन की—करु० आरती० ॥२॥
सुन्दर सरयू कमला तीरे।
झूलत सियवर धीर समीरे।
रसवश रसिया रमकत झमकत।
शोभा लखु मन भावन की... करु० आरती० ॥३॥

हरषित सखी आरती उतारैं।
सुमन वरषि जय जयति उचारैं।
यह सुख सदा अखण्ड रहे नित।
'प्रेमनिधी' लहरावन की...करु० आरती० ॥४॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ आरती झूलन की ❀

युगल छबि दुलहा दुलहिन की।
आरती करिये झूलन की॥
दिये गलबाँही परसपर राजत।
शिरन चन्द्रिका क्रीट विराजत।
अंग--अंग आभूषण छाजत।
गल बिच माला फूलन की॥ आरती करिये० ॥१॥
बहत बयारि त्रिबिध अति सननन।
करत कटाक्ष नयन की सयनन।
अरुण अधर दशनन की दमकन।
काम रती सुख मूलन की॥ आरती करिये० ॥२॥
करहिं आरती छबि अवलोकति।
सरवस अपनो वारि निहारति।
तोरति तृण छबि हिय में धारति।
'नवल किशोर' दुकूलन की॥ आरती करिये० ॥३॥

## ❀ आरती हेम हिंडोले की ❀

रसिया झूलत हेम हिंडोरे, चलुसखी आरती आज उतारू।
आरती आज उतारू रसिकवर, मोहन रूप निहारू। रसिया०
सावन मास सुहावन आयो, मेघवा जल बरसाय।
सखियनके चितचावचौगुनो, झमकि झुलावनजाय। रसिया०
जनकलली संग साजत झूलत, प्रियतम अवध किशोर।
जयजयकार करत आलीगण, नटत पपीहा मोर॥ रसिया०।
हरित छटा-घन-घटा साँवरी, चपला चमक सुहाय।
मेघ मलार गुणीजन गावत, ललितलता लहराय॥ रसिया०॥
मिथिला अवध विहारी हरषत, सरसत स्नेह अपार।
'प्रेमनिधी' पाहुन मेरोप्यारो, करत प्यार बलिहार॥ रसिया०

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ जल बिहार की आरती ❀

आरती जल बिहार की प्यारी।
करत सखीजन तन मन वारी॥
नौका सुभग सखीजनल्याई। राजत तापर सिय रघुराई॥
बाढ़त सरयू तरंग रङ्ग में। लहर लेत देखहु उमंग में॥
प्यारी कबहुँ चलावत नैया। विहँसत आली लेत बलैया॥
सियाजू कहत विराजो प्यारे। सौंपहु नैया हाथ हमारे॥
पियप्यारी दोऊ नावचलावत। छिन-छिनस्नेह सुधा बरसावत

जलबिहारकी सुन्दर झांकी। करत आरती चितवनि वांकी।।
मेरी नैया पार उतारो। 'प्रेमनिधी' तन-मन-धन वारौं।।

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ दशहरा दरबारकी आरती ❀

आरती उतारो आली दशहरा दरबार की।
दशहरा दरबार की री शोभा अपरम्पार की ।।टेक।।
आज विजयदशमी विजईहै, सिंहासन पर कौशल्या कुमारकी
जय जयकार ध्वनि नभ छाई, वरसत सुमन झड़ी बेशुमारकी
बजतदुन्दुभी नौबतडंका, शंख सहनाईसखी घण्ट घड़ियालकी
गजघोड़ा रथ दौरत आवत, छत्र चँवर शुभ छड़ीके पुकारकी
जगमग जगमग झलकत ज्योती, नाचत नाक नटीके बहारकी
'प्रेमनिधी' पावन यहदिनहै, जनकलली जयदशरथके लालकी

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ श्री शरदपूर्णिमा की रास आरती ❀

आरती रास विहारी की। रसिक वर जनकदुलारी की ।।
रास प्रिय रसिक शिरोमणि राम।
अंग-अंग शोभा अति सुख धाम।
छबि लखि लाजत कोटिन काम ।।
नटत पिय प्यारी-रमत सुकुमारी-मोहन मनहारी—
छयल की छबि मतवारी की। आरती रास बिहारी०।।१।।

सोमवट सुन्दर सरजू तीर।
रमत जहां श्री सीता रघुबीर।
धरै कोउ कैसे के सखि धीर॥
निरखी सुधि भूली-सरस रस फूली, मगन मन भूली--
'प्रेमनिधि' प्रियतम प्यारी की। आरती रास विहारी॥२॥
—श्री प्रेमनिधी जी।

## ❀ दीपावली की आरती ❀

करहु सखि आरती आज दीपावली।
सजत शृङ्गार-सब हुलसि उमगत अली॥
उतरि आये मनहुँ चाँद तारे सभी।
ज्योति जगमग झलक दिव्य घर घर जली॥
बारि-घृत बाति कर्पूर निज कर लिये।
धरति अति हरषि हिय मनहुँ चम्पक कली॥
कोटि शशि सूर्य जनु, धारि कै अमित तनु।
निरखि बलि जात सियराम शोभा भली॥
'प्रेमनिधि' प्रेम कवि कौन वर्णन करे।
युगल छवि छहरि गई अवध में गली गली॥
—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ श्री रघुबर की आरती ❀

आरती कीजै श्री रघुबर की।
सतचित आनन्द शिव सुन्दरकी॥

दशरथ तनय कौशिला नन्दन ।
सुर मुनि रक्षक दैत्य निकन्दन ॥
अनुगत भक्त भक्त उर चन्दन ॥
मर्यादा पुरुषोत्तम वर की···आरती कीजं० ॥ १ ॥
निर्गुण-सगुण अरूप रूप निधि ।
सकल लोक वन्दित अनेक विधि ॥
हरण शोक भय,दायक सब सिधि॥
माया रहित दिव्य नर वर की···आरती० ॥ २ ॥
जानकि पति सुरपति जगतीपति ।
अखिल लोकपालक त्रिलोक गति ।
विश्व वन्द्य अनवद्य अमित मति ।
एकमात्र गति सचराचर की·· आरती कीजै० ॥ ३ ॥
शरणागत वत्सल व्रत धारी ।
भक्त कल्पतरु जय असुरारी ।
नाम लेत जग पावनकारी ॥
वानर सखा दीन दुख हर की···आरती० ॥ ४ ॥

'भाई जी'—श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार

## ❀ जय जगदीश हरे ❀

जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट (२) छिन में दूर करे ।।ॐजय०।।
जो ध्यावै फल पावै, दुःख मिटै मनका ॥ प्रभु० ॥

सुख सम्पति घर आवै (२) कष्ट मिटै तन का॥ ॐ जय०॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्रभु० ॥
तुम बिनु और न दूजा (२) आश करूँ जिसकी॥ ॐ जय०॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु० ॥
परब्रह्म परमेश्वर (२) तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय०॥
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता ॥ प्रभु० ॥
मैं मूरख खल कामी (२) कृपा करो भर्त्ता ॥ ॐ जय० ॥
तुम हो अगम अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्रभु० ॥
किसविधि मिलूँ दयामय (२) मैं तुमको कुमती ॥ ॐ जय०॥
दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु० ॥
अपने हाथ उठाओ (२) द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय० ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु० ॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ (२) सन्तन की सेवा ॥ ॐ जय०॥

## ❀ श्री राधिकावर की आरती ❀

आरती कीजै श्याम सुन्दर की । नन्दकुमार राधिका वरकी।
भक्ति दीप कर प्रेम सुबाती । सतसगति कर अनु दिनराती
आरती ब्रज युवती मन भावै। श्यामलीला 'हितहरिवंशगावै

—श्रीहित हरिवंशजी महाराज

## ❀ श्री युगल किशोर जी की आरती ❀

आरती युगलकिशोर की कीजै। तन-मन-धनन्योछावर कीजै॥
गौर श्याम मुख निरखि रहीजै, प्रेम स्वरूप नयन भरि लीजै

रवि शशि कोटि वदनकी शोभा। ताहि देखि मेरो मन लोभा
मोर मुकुट करमुरली सोहै। नटवर वेष निरखि मन मोहै ॥
ओढ़े नील पीत पट सारी। कुञ्जन ललना लाल बिहारी।
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरती करत सकल ब्रजनारी
नंदनंदन वृषभानु किशोरी। 'परमानन्द' प्रभु अविचलजोरी

—श्री परमानन्द जी

## ❀ श्री सरयू जी ❀

पूरण ब्रह्म सनातन कहिये, सरयू वेद बखानी।
श्रीसियवर के नैन से निकसी, रामगंग जगजानी ॥
ब्रह्मलोक से धारा आई, गुरु वशिष्ठ महि आनी।
निशिदिन सरयू दूध बहत है, मूरख जानै पानी ॥
स्वर्गद्वार पर सहसधार है, मुक्ति भरै जहाँ पानी।
मुदित मनोहर लहरि लेति हैं, बोलति मधुरी बानी ॥
रामघाट अस्नान करन को, आये मुनिवर ज्ञानी।
रघुवर, लछिमन, भरत, शत्रुहन, हनूमान अगवानी ॥
सरयू तीर अयोध्या नगरी, श्रीरघुवर रजधानी।
सुर सनकादि और ब्रह्मादिक, सेवत हैं मुनिज्ञानी।
'तुलसिदास' अवधकी महिमा, श्रीमुख राम बखानी।
पूरण ब्रह्म सनातन कहिये, सरयू वेद बखानी ॥

—श्रीगोस्वामीतुलसीदासजी

## ❀ श्री तुलसी जी ❀

नमो नमो तुलसी महारानी।
जाके दरश परस अघ नाशैं, महिमा वेद पुराण बखानी॥
शाखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरणकमल लपटानी॥
तुम तुलसी पूरण तप कीन्हो, शालिग्राम महा पटरानी॥
राम वाम कर दोना लीन्हो, पूजन चले महा गुरु ज्ञानी॥
धूप--दीप नैवेद्य–आरती, पुष्पन की वर्षा वरसानी॥
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, विनतुलसी हरि एक न मानं॥
शिव-सनकादि औरब्रह्मादिक, खोजत फिरत महामुनिज्ञानी
प्रेमभक्तिकरि हरिवशकीन्हे, साँवरि सूरति तेरेहियेलपटानी
'तुलसीश्याम' मैया तेरो यश गावैं, भक्तिदान दीजैसुखदानी।
नमो नमो तुलसी महारानी॥

—श्री तुलसीश्याम जी

## ❀ श्री हनुमान जी की आरती ❀

आरती कीजै हनुमानलला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बलसे गिरिवर काँपै। रोगदोष जाके निकट न झांपै॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंक सो कोट समुद्रसी खाई। जात पवनसुत वार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। श्रीसीतारामजीके काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उबारे॥

पैठि पताल तोरि जमकारे । अहिरावण की भुजा उखारे ।।
बाँये भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संत जन तारे ।।
सुरनर मुनिआरती उतारै । जय जय जय हनुमान उचारे ।।
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरती करत अंजना माई ।।
जो हनुमानजीकी आरती गावे। बसि वैकुंठ परम पद पावै ।।

## ❀ श्री बजरंगबली की आरती ❀

आरती श्री बजरंग बली की ।
करिये सनेह भरी नित नीकी ।।टेक।।
सुमिरत संकट शोच निवारे, भक्त जनों के काज सुधारे ।
अंजनी नन्दन रामदुलारे, पूरण करत कामना जी की ।।
आरती श्री बजरगबली की ।

कंचन वरण विराजै देही ।
हृदय बसत रघुवर वैदेही ।।
भक्त शिरोमणि राम सनेही ।
जन मन रंजन भंजन भी की ।। आरती श्रीबजरंग० ।।१।।
जो रामायण पाठ सुनावै ।
सीताराम नाम जो गावै ।।
तिनके सब दुःख द्वन्द मिटावें ।
एकहुँ चाल न चलै कली की ।। आरती श्रीबजरंग० ।।२।।
पवन पुत्र की आरती गावै ।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै ।।
झांझ घड़ी करताल बजावै ।

निरखहु शोभा सुमन झरी की ॥ आरती श्रीबजरंग०।३।
जग की माया जाल छुड़ाओ ।
प्रभु चरणों में प्रीति लगाओ ॥
सरस स्नेह का रंग चढ़ाओ ।
'प्रेमनिधी' जय मारुति जी की॥आरती श्रीबजरंग०॥४॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ श्री अञ्जनीनन्दन की आरती ❀

आरती श्री अञ्जनि नन्दन की ।
अतिशय प्रिय सिय रघुनन्दन की ॥१॥
जय समीर सुत सुभग सु छबितन ।
उषा उदित अरुणि रवि भक्षण ॥
देवन कृत सादर अभिनन्दन ।
हनुमान सुर जन रंजनकी । आरती०
जय केसरी किशोर कपीश्वर ।
राम सखा सुग्रीव सचिव वर ।
राम काज अवतार अवनि पर ।
राम दूत सियसुख कन्दन की ॥ आरती० ॥
जय एकादश रुद्र रूप धर ।
भक्त विभीषण सुखद शोकहर ।
दश मुख उपवन लंक ध्वंशकर ।
महावीर अरि भव फन्दनकी॥आ० ॥

जय श्री 'रमण' नाम उर धारक।
परम कृपालु संत हित कारक।
संकट हर मुद मंगल कारक।
सकल सिद्धि प्रद जग वन्दन की ॥ आरती श्री० ॥

—पं० श्रीजगन्नारायणजी शास्त्री "रमण"

## ❀ जय बजरङ्गबली ❀

जय बजरङ्ग बली प्रभु जय बजरङ्ग बली।
सङ्कट विकट विमोचन(२)सबकी करत भली।ॐजय।
कंचनवर्ण प्रभंजन, पुत्र गदाधारी। प्रभु पुत्र०।
दारुण दुःख निकन्दन (२) जयजय असुरारी।।ॐजय०।
मातु अंजनालाल रामके, सेवक सुखकारी प्रभुसेवक०।
सियजूके परमदुलारे (२) मुद मङ्गलकारी। ॐजय०।
चरणकमल जो ध्यावे, मनवांछित पावै। प्रभु मन०।
रामभक्त बन जावै (२) सन्तन मन भावै। ॐजय०।
महावीर रणधीर रामके, दूत महादानी। प्रभुदूत०।
चरणकमल प्रणमामी (२) जयहनुमत् स्वामी ।।प्रभु०।
जय हनुमान कृपालु, कामना सिद्ध करै मनकी।प्रभुसिद्ध
रामरङ्गीले रक्षा (२) सदा करें जनकी ।।ॐजय०।।
रामनाम रामायण सुनकर,अति हर्षित होते।प्रभुअति०
'प्रेमनिधी में प्रमुदित (२) लगा रहे गोते ।। ॐजय०।।

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ आरती श्रीरामायण जोका ❀

आरती श्री रामायण जी की।
कीरती कलित सिय पी की ॥टेक॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
वालमीक विज्ञान विशारद।
शुक सनकादि शेष अरु शारद।
वरणि पवनसुत कीरति नीकी ॥आरती श्रीरामायण०॥
संतत गावत शंभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि विज्ञानी।
व्यास आदि कविवर्य वखानी
कागभुसुण्डी गरुडके ही की ॥ आरती श्रीरामायण० ॥
चारिउ वेद पुराण अष्टदश।
छओौ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस।
तन–मन--धन सन्तन को सरवस।
सार अंश सम्मत सब ही की ॥आरती श्रीरामायण०॥
कलिमल हरणि विषय रस फीकी।
सुभग शृङ्गार मुक्ति युवती की।
हरणि रोग भव मूरि अमी की।
तांत मात सब विधि तुलसी की॥आरती श्रीरामायण०॥

## ❀ श्री रामायण जी की आरती ❀

( गुजराती भाषा में )

उतारो आरती श्री रामायण जी नी।
रामायण जी नी भवतारायण जी नी ॥ उतारो० ॥
सन्त जनोनु जीवन धन छे, रामकथा अति सरस मधुरी ॥
सांभलतां सन्ताप टले छे, निर्मल बुद्धि बने रस भीनी ॥
शेष महेश शारदा नारद, कथा करे रघुवंशमणी नी ॥
'प्रेमनिधी' नुँ प्रेम रतन धन, लीला ललित सदा श्रीहरिनी ॥
उतारो आरती श्री रामायण जी नी ॥

—श्री प्रेमनिधि जी

## ❀ श्री रामानन्दाचार्य जी की आरती ❀

श्री रामानन्दाचार्य की शुभ आरती करिये।
भाव सहित गुरुदेव के दोऊ चरणन परिये ॥
प्रगटे श्रीरघुवीर पतित पावन अवतारी।
श्रीप्रयाग के भाग्य, त्रिवेणी तट सुखकारी ॥
पुण्य सदन हैं पिता, सुशोला मातु धन्य है।
गुरु राघवानन्द, आप सम कौन अन्य है ॥
पञ्चगग को घाट, धन्य सुरसरि श्रीकाशी।
द्वादश शिष्य प्रधान, धन्य सियराम उपासी ॥

धन्य अनन्तानन्द, कबीर रैदास सुजाना ।
पीपा धना महान, धन्य गुरु भक्त प्रधाना ॥
'प्रेमनिधी' परि पांव, आरती नित्य उतारे ।
जय श्री रामानन्द जगद्गुरु जयति उचारे ॥

—श्री प्रेमनिधी जी

## ❀ भगवान रामानन्दचार्य महाप्रभुकी आरती ❀

जयति श्रीरामानन्द कृपाल, करूँ मैं आरती दीनदयाल ।
सुशीला कुँवर--सुघर -तन गौर ।
मधुर मूरति जन—मन चितचोर ॥
जगद्गुरु-वर यति पति शिरमौर ।
न इनकी समता में कोई और ॥
परमउपकारी,दीनदुखहारी,सुजन सुखकारी,रामअवतारी
दयामय पुण्य सदनजू के लाल-करूँ मैं आरती दीनदयाल
सदा काषाय वस्त्र धारी ।
कमल-कर शुभ त्रिदण्ड धारी ॥
सु तुलसी माल छटा न्यारी ।
तिलक श्रीभाल सुद्युति कारी ॥
कृपाकी खान,मन्द मुसुकान-सुजनकल्याण,भक्ति वरदान,
भक्त को देकर करें निहाल--करूँ शुभ आरती दीनदयाल
आपके द्वादश शिष्य प्रधान ।
जगतमें जिनका सुयश महान ॥

अनन्तानन्दादिक सु महान ।
धना--रैदास–कबीर–सुजान ॥
सुखा-अरुसेन,सकल गुण-ऐन,भक्त सुखदैन-वचनश्रुतिवैन
भक्त पीपा–पद्मावति बाल--करूँ मैं आरती दीनदयाल ।

आरती लेकर कंचर थार ।
उतारूँ यतिवर चरण उदार ॥
श्रीरामानन्द–रूप–हिय धार ।
सु'निधिरसमोद'चरणबलिहार॥

आरती गावो,निरखिसुखपावो,सुमनवरसावो,सदागुणगावो
तभी तो छूटै माया जाल–करूँ मैं आरती दीनदयाल ॥

—पुजारी अनन्तराम शरण 'श्रीरसमोदनिधि'

## ❀ श्री गुरु जी की मंगल आरती ❀

मंगल आरती श्री गुरुजी चरण की ।
गुरुजी चरण सीतारामजी चरणकी ॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, चंदन पुष्पसों पूजा करणकी ॥
गुरुजीकेचरणमेंचिह्नविराजै,जगमगजगमगज्योतिनखनकी
चार आरती चित में धारै,नौका भवनिधि पार करणकी॥
कटि केहरी कौपीन विराजै,यूगल आरती जन सुधरनकी॥
जन सुधरन रामा विषय हरण की ॥ मंगल आरती०॥

मुख मयंककी एक आरती,सोभा अमित अरुण अधरनकी
अरुण अधरन की वचन मधुरन की ।। मंगलआरती० ।।
सर्व अंगकी सात आरती,हिय के दिव्य नयन उघरनकी।
नयन उघरन रामा मन्त्र श्रवण की ।। मंगल आरती० ।।
तुलसीतिलक मालछवि उपमा,प्रातकालके सूर्य किरणकी
सूर्य किरण हृदय कमल खिलन की।। मंगल आरती० ।।
सरयूजल को अरघ दीजिये,वारवार गुरु चरण परनकी।
गुरुजीकी सातपरिकर्मा कीजै,दुख नाशै चौराशी भ्रमणकी
चरण धोइ चरणामृत लीजै,डर छूटै जगजनम मरणकी।
जोजनगुरुजीकीआरतीगावैं,मातपिताकुलतारण तरणकी।।
जन रघुनाथ गुरु आरती गाये,श्रीसीतारामजीके दर्शनपाये।
दरसन पाये रामा सुमन वरसाये, ।। मंगल आरती० ।।

## ❀ श्री सद्गुरु--भगवान की आरती ❀

श्रीसद्गुरु भगवान की सखि आरती करिये।
सिगरे जाल जवाल को उरते परिहरिये ।।
याद करत बरबाद होत भ्रम,
पद पंकज हिय धारिके भवनिधि से तरिये ।।
लाभ जनम को लेहु भली विधि,
गुरुसेवा सुसम्हाँरि के सियाराम उचरिये ।।
लली लाल मिलिहैं विनही श्रम,

लगन ललित लहरात हिय मनमोद सुभरिये ॥
सर्वेश्वर गुरु वेद पुकारे,
दीन हीन जन जानि जिय,प्रभु मम-दिशि-ढरिये॥
रटौं नाम दीजै यह वर अब,
अमित प्रबल उत्पात मम तेहि हिये न धरिये ॥
नवधादिक दृढ भक्ति बसै हिय,
बिगरी कोटिन जनम की प्रभु ताहि सम्हरिये॥
जीवन लाभ चरण की सेवा,
देहु 'मधुर' हर्षाय यह विनती नँ विसरिये ॥
श्रीसद्गुरु भगवान की सखि आरती करिये ॥

—श्री मधुरलता जी

## ❀ आरती श्रीगुरुदेव की ❀

जय गुरुदेव दयामय, दीनन हितकारी ।
जय जय मोह विनाशक, भवबन्धन हारी ॥ जय गुरु० ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरुमूरति धारी ।।प्रभु गुरु० ।।
वेद पुराण बखानत(२)गुरुमहिमा भारी ||ॐजयगुरु०।।
जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीन्हे ॥ प्रभुदान० ॥
गुरु बिनज्ञान न होवे(२)कोटि जतन कीन्हे।।ॐजयगुरु०॥
माया मोह नदी जल, जीव बहै सारे ।। प्रभु जीव० ॥
नाम जहाज बिठाकर (२) गुरुपल में तारे॥ॐजयगुरु०॥

काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे ।। प्रभु चोर० ।।
ज्ञान खडग लै कर में(२)गुरु सब संहारे ।।ॐजयगुरु०।।
नाना पंथ जगत में,निज निज गुण गावै ।।प्रभुनिजनिज।।
सबका सार बताकर(२)गुरु मारग लावैं ।।ॐजयगुरु०।।
गुरु चरणामृत निर्मल,सब पातक टारी ।। प्रभु सब० ।।
वचन सुनत तम नाश(२)सब संशय हारी।।ॐजयगुरु०।।
तन मन धन सब अर्पण,गुरु चरणन कीजै ।। प्रभु गुरु०।।
'ब्रह्मानन्द' परम पद(२)प्रेम भक्ति लीजै ।।ॐजयगुरु०।।

—श्री ब्रह्मानन्द जी

## ❀ श्रीहरि गुरु सन्त की आरती गुजराती ❀

आनन्द मंगल करूँ आरती, हरि गुरु सन्तनी सेवा ।
सन्त मले तो महासुख पामूं,
गुरुजी मले तो मीठा मेवा ।। आनन्द० ।।
सकल तीरथ सद्‌गुरुना चरणे,
गंगा जमुना रेवा ।। आनन्द० ।।
प्रेम धरी मन्दिरे पधराऊँ,
सुन्दर सुखडां लेवा ।। आनन्द० ।।
जेने आँगणीये तुलसीनो क्यारो,
शालीग्राम नी सेवा ।। आनन्द ।।
शिव-सनकादि और ब्रह्मादिक,
नारद--शारद जेवा ।। आनन्द० ।।

ते चरणे चाली दे आव्या,

अमने दरशन देवा ॥ आनन्द० ॥

त्रिभुवन तारण अधम ओधारण,

अगम अगोचर एवा ॥ आनन्द० ॥

कहे 'प्रीतम' ओलखो अणसारे,

हरिना जन हरि जेवा ॥ आनन्द० ॥

## ❀ श्री सद् गुरु आरती ❀

आरती श्री गुरुदेव चरण की ॥ ०

प्रथम आरती युग पद की कीजै,

चार वार चरणन चित दीजै,

सुख--सम्पति नाना विधि लीजै,

महिमा मय जग मग-विचरण की ॥ १ ॥ आरती०

दूजी आरती नाभि देश की,

युगल वार शुभ कटि प्रदेश की,

धन्य--धन्य वैष्णव--सुवेश की,

पतितोद्धारण कष्ट हरण की ॥ २ ॥ आरती०

तीजी आरति मुख--मण्डल की,

एक वार मुख चन्द्र--कमल की,

ग्रन्थि छुड़ाती हृदय--पटल की,

वचन प्रकाशन मोद-भरण की ॥३॥आ०

सप्त वार की सरस आरती,
सर्व अङ्ग की बोल भारती,
सु छवि वारती, विपद्टारती,
"मौनी' जैसे अधम तरण की ॥ ४ ॥ आरती०

—सन्त श्रीसीतारामजी—"मौनीजी"

## ❀ श्री गुरुदेव की आरती ❀

आरती श्री गुरुदेव की कीजै।
श्रीहरि रूप दृगन लखि लीजै।
मन्त्र दान करि जिन भ्रम टारयो।
ज्ञान सिखाय मोह निरुवारयो।
दै प्रभु भक्ति भाव विस्तारयो।
ऐसे गुरु दरसन करि जीजै ॥ १ ॥ आरति श्री०
कोटि तीर्थं गुरु चरणन राजैं।
पद नख मणि गण ज्योति विराजैं।
ध्यान धरत मनके दुःख भाजैं।
श्रद्धा युत वचनामृत पीजै ॥ २ ॥ आरति श्री···
निशिदिन अगणित अधम उधारत।
प्रणतन भव सागर सों तारत।
आयो मैं शरणागत—आरत।
मोहि मिलाय राम सों दीजै ॥ ३ ॥ आरति···

जनमत मरत महा दुख पायो।
श्रीगुरु कृपा स्वरूप लखायो।
अब "जयरामदेव" पथ आयो।
दीजै प्रेम--भक्ति रस भीजै ॥ ४ ॥ आरति श्रीगुरु…

—महाकवि श्रीस्वामी जयरामदेवजी महाराज

## ❀ श्रीसद्गुरु भगवान की आरती ✻

(पद–१८)

जय-जय श्रीगुरुदेव–तुम्हारी।
आरती करूँ मोद-मन भारी ॥टेक॥

ब्रह्मा-विष्णु अरु महादेवा।
निशिदिन करै तुम्हारी सेवा।
तुम सम नही कोई हितकारी ॥ जय जय०…

शेष--गणेश व्यास-जनकादिक।
नारद-शारद-शुक-सनकादिक।
सबने गुरु आज्ञा शिरधारी ॥ जय जय०…

सुर-नर-मुनि जन आदि घनेरे।
गुरु पूजन करे साँझ सबेरे।
दोउ कर जोड़े खड़े अगारी ॥ जय जय०…

हरिसे गुरु महिमा अधिकाई।
जानी जिन कीनी सेवकाई।

राम–लखन–श्रीकृष्ण मुरारी ॥ जय जय०···

श्रीगुरु चरण शरण जो आवै।
गुरुसम हो सो गुरु पद पावै।
माया मोह बन्धन सब टारी ॥ जय जय श्री०···

गुरु प्रताप पावै प्रभुताई।
रङ्कहुँ लै शिर छत्र धराई।
बहु विधि से पूजें नर–नारीं ॥ ६ ॥ जय जय···

गुरुविन आतम ज्ञान न होवै।
मूरख जनम भूलमें खोवै।
वार–वार कहैं वेद पुकारी ॥ जय जय०···

तन–मन-धन गुरु सेवा कीजै।
मानुष जन्म सफल कर लीजै।
"राम रतन" गुण-गावैं पुजारी ॥ जय जय०···

—"भक्तकवि"–श्रीरामरतनजी।

## ❀ श्री सद्गुरु-आरती ❀

श्री गुरुदेव दयालु की शुभ आरती करिये।
स्वामी जी महाराज की शुभ आरती करिये ॥
मीच-कीच भव मिटत सुनत श्रीगुरु-वर वाणी।
श्री पद-कमल-पुनीत–परत अघ--ओघ-नशानी ॥
अमल अनूप–उदार–सुयश सुनि जगसे तरिये ॥१॥

बतलाये गुरु देव कृपा करि श्री प्रभु-पदरति ।
धन्य भयो मम जन्म, इष्ट पायो सीता--पति ॥
कियो बहुत उपकार, सदा जय--जयति उचरिये ॥२॥
शोच सकल करि दूरि भक्ति--भावना सिखाये ।
रघुनन्दन--सिय--चरण---प्रेम---सद्भाव दृढ़ाये ॥
दायक अविचल प्रेम, सदा शुभ नाम सुमरिये ॥३॥
सङ्कीर्त्तन सियाराम--नामका करलो प्यारे ।
जीवन है अनमोल, बिताओ व्यर्थ न प्यारे ॥
प्रेम सहित गुरु देव के, चरणन में परिये ।४॥
मङ्गल मय गुरुदेव की, मूरति उरधारी ।
नित्य चरण करि सेव, परम फल कह श्रुति चारी ॥
धिक् जीवन "रसमोद निधि" गुरु सेवा करिये ॥५॥
श्री गुरुदेव दयाल की शुभ आरती करिये ॥

—रसमोद निधि

## ❀ श्री सद्गुरु भगवान की आरती ❀

श्री सद्गुरु भगवान की शुभ आरती करिये
सील सनेह निधान की शुभ आरती करिये ॥
ताप त्रिविध सब पाप नशावन जन दुःखहारी ।
राम सरिस सुखधाम, बचन अमृत सुखकारी ॥

मीन राम रस सिन्धु के, छबि हियमें धरिये ॥श्रीसद्०
यतिवर करुणा पुंज सकल जग मंगल कारी ।
श्रीपद–कमल--पराग अखिल अघ–औगुनहारी ॥
मनके सकल विकार नशै, गुरु नाम सुमिरिके ।।श्रीस०
थुकिये वाही मुखन जाहि मुख राम न आवें ।
राम नाम के परम रसिक जे सन्त कहावें ॥
दायक प्रभु पद प्रीति, हृदय--मन मोद उमंडिये॥श्रीस०
सरणागत पर कृपा अमित, निशिदिन बरसावैं ।
जीवन को फल श्री हरि--गुरु सेवा चित लावैं ॥
मन्त्र षडक्षर दियो परम धन सोइ हिय धारिये॥श्रीसद्०
हाथ सुकंचन थार वारि आरती उतारे ।
राम सिया सङ्ग पूजि सुगुरु वर छबि हिय धारे ॥
जयति जयति करि शोर'मोदनिधि'चरणन परिये॥श्री०

—श्री रसमोदनिधि

## ❀ आरती की अध्यात्म भावना ❀

ऐसी आरती राम रघुबीर की करहु मन ।
हरण दुख द्वन्द गोविन्द आनन्द घन ॥ टेक ॥
अचर–चर रूप हरि, सर्वगत सर्वदा,

वसत इति वासना 'धूप' दीजै ।
'दीप' निज बोधगत कोह—मद—मोहतम,
प्रौढ़ अभिमान चित वृत्ति छीजै ॥ १ ॥
भाव अतिशय विशद प्रवर 'नैवेद्य' शुभ,
श्रीरमण परम सन्तोषकारी ।
प्रेम ताम्बूल, गत शूल संशय सकल,
विपुल भववासना बीज हारी ॥ २ ॥
अशुभ शुभ कर्म-घृत पूर्ण 'दश वर्तिका',
त्याग पावक सतोगुण प्रकाशं ।
भक्ति—वैराग्य—विज्ञान 'दीपावली'
अर्पि 'नीराजनं' जग निवासं ॥ ३ ॥
विमल हृदि-भवन कृत 'शांति-पर्यंक' शुभ
शयन विश्राम श्रीराम--राया ।
क्षमा--करुणा--प्रमुख तत्र परिचारिका,
यत्र हरि तत्र नहि भेद--माया ॥ ४ ॥
आरती-निरत सनकादि-श्रुति-शेष-शिव,
देव-ऋषि, अखिल मुनि तत्व दरशी ।
करै सोई तरै, परिहरै कामादि मल,
वदति इति अमल मति दास तुलसी ॥५॥

—गोस्वामी श्री तुलसीदास जी

## ❀ मङ्गल–भावना ❀

सीता रानी का अचल सुहाग रहे।
राजाराम के शिर पर ताज रहे॥
जब तक पृथिवी अहि शीश रहे।
नभमें शशि सूर्य प्रकाश रहे॥
गंगा यमुना की धार रहे।
तब तक यह बानक बना रहे।
सीतारानी का अचल सुहाग रहे।
राजा राम के शिर पर ताज रहे॥
ये बना रहे वे बनी रहे।
नित बना बनी में बनी रहें॥
अविचल श्री अवध का राज रहे।
प्रेमी जन का बड़ भाग रहे॥
सुहाग रहे शिर ताज रहे।
महाराणी अमर महाराज रहे॥
सीता पति का साम्राज्य रहे॥

## ❀ आज मङ्गलवार है ❀

आज मङ्गलवार है बजरङ्गी का दरबार है।
प्रेम सहित जो सुमिरण करता, उसका बेड़ापार है॥
पवन पुत्र रघुवर के प्यारे।
मातु सिया के बड़े दुलारे।
रामकाज हित जगमें जिनका, मङ्गलमय अवतार है॥प्रेम०

श्री ... शोध संस्थान ... अयोध्या



16732

रामचरित सुनिवेको रसिया ।
युगल माधुरी छबि मन वसिया ।।
ऐसे परम समर्थ दयामय, करुणा के आगार है ।।प्रेम०।।
जो कोय इनका ध्यान लगावै ।
जो रामायण पाठ सुनावै ।।
उसको सियवर पद पङ्कजमें। देते प्रीति अपार है ।।प्रेम०।।
पवनतनय बल पवन समाना ।
बुधि विवेक गुण तेज निधाना ।।
रामचरण पङ्कज मधुलोभी, प्रभुका सुयश उदार है।।प्रेम०
पवनतनय के चरित सुहाये ।
जाम्वन्त रघुपति हि सुनाये ।।
ऋणिया भये भरत रघुनन्दन, जानत सब संसार है।।प्रेम०।।
लाल वसन भूषण तन छाजै ।
हृदय सिया रघुवीर विराजै ।।
लाल लंगोटा लाल जनेऊ, आनन अति अरुणार है।।प्रेम०
रघुनन्दन जेहि हृदय लगाये ।
कहि प्रियबन्धु परमसुख पाये ।।
महावीर बाँकुरे हठीले देवनके सरदार है ।। प्रेम० ।।
जो कोई इनकी आश लगावै ।
और आश नहिं मनमें लावै ।।
मोदनिधी ताके हित मारुति रहते सदा तैयार है ।
प्रेम सहित जो सुमिरण करता, उसका बेड़ापार है ।।

# श्रीसीतारामीय--सेवा मन्दिरम्

## नजरबाग--अयोध्या, ( उ० प्र० )

यह एक गुजराती धर्म संस्थान आपका स्वागत करता है।

इसके प्रधान उद्देश्य—

१-रोगी दुखी जनताकी औषधोपचार द्वारा निःस्वार्थसेवा
२-गुजराती तीर्थयात्रियों को श्रीअवध में सुन्दर सम्पूर्ण सहयोग।
३-आचार्य श्रीरामानन्द-स्वामी के उदार सिद्धान्तों का तथा सन्त साहित्य का प्रचार प्रसार।
४-आजीवन अवध वास करने वाले वृद्ध जनों की स्वल्प व्यय में व्यवस्था।
५-भजन-कीर्तन-पुण्य कार्य-कथा पूजा में सप्रेम सहयोग।

आप हमारे उद्देश्य को साकार स्वरूप प्रदान करने तथा सफल बनाने में अपना तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर हमारा मंगल मनोरथ अवश्य पूर्ण करेंगे।

निवेदक:—

**मन्त्री--श्रीसेवा मन्दिर समिति**

नजरबाग, अयोध्या ( उ० प्र० )

[stamp]

# श्री दुल्हा भगवान का मन्दिर

## श्रीरामानन्द आश्रम, जनकपुर धाम।

आप श्रीमिथिलाजी पधारें तो श्रीरामानन्द आश्रम में—श्रीदुलहा भगवान की झाँकी दर्शन अवश्य करिये। आपको परमानन्द प्राप्त होगा, यहाँ पर सनातन धर्मका विशाल साहित्य पढ़ने को मिलेगा, साथ ही साथ भजन-कीर्तन-कथा-सत्संगका भी लाभ प्राप्त होगा। श्रीमिथिला में आकर श्रीदुलहा सरकार का दर्शन तो अवश्य करिये। ये श्रीजनकपुर धाम में प्रगट प्रभु विराजिते हैं। प्रतिवर्ष अनेकों भक्त आपकी कृपा प्राप्त कर कृतार्थ बनते हैं।

निवेदक:—

**श्री रामानन्द आश्रम**

जनकपुरधाम (नेपाल)

---

श्रीजनकपुर धाम निवासी श्रीसिवदेनी प्रसाद साह रौनियार वैश्यकी धर्मपत्नी **श्रीमतीतारादेवी** के तरफसे सप्रेम भेंट।

दर्शनाभिलाषी—

**श्रीशिवदेनीप्रसाद मदनप्रसाद साह**

रौनियार वैश्य

श्रीजनकपुर धाम ( नेपाल )

---

मनोराम प्रिंटिंग प्रेस, श्री अयोध्या जी।